❑ अशोक

कथाकार, समालोचक अशोकक एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' प्रकाशित

ब्रह्मोत्तर

हे राजा,
अहांक लीला
अपरम्पार अछि।
अहां हमर बाड़ी मे
फड़ल-फुलायल
गाछ सभ के
कटबा देलहुं
हम किछु नहि बजलहुं।
मुनिगा कि केरा कि लताम
के गाछ रोपि लेब
फेर स'
हमर भरोस जीवित छल।
हे राजा,
अहां मुदा एतबे पर
नहि मानलहुं
हुकुम देलहुं जे
अपन घरो हटा लिअ'
मुआबजा देब।
अहांक एहि मुनादी स'
हमरा लागल
अहां हमरा स' हमर
परिचय छीनि रहल छी।
हमर बाबू कोनो बस्तु कें
अनुपयोगी ओ बेकार नहि
मानैत छला।
रहरहां कहल करथि ओ
कोनो बस्तु निरर्थक बेकार
नहि होइत छैक।
सुतरी कि जौर
आ कि गरदामी कि पेना
सभक प्रयोजन कहियो
कखनो पडि सकैये।
ओ घर मे
हरेक प्रयोजनीय बस्तु

नियत जगह पर राखथि
अन्हारो मे सेहो घेरि जाय।
ओ चलल गेला
मुदा हम
ओहि जगह पर
मुनरी कि जौर
गरदामी कि पेना
आइयो राखैत छी
जत' ओ राखल करथि।
ओ जगह सभ
बाबूएक समय स'
ठेकनाओल अछि
हमरा, हमर परिवार के।
हे राजा,
चलू, हम अहांक इहो
हुकूम मानि लेलहुं।
विकास लेल लोक के
उपट' पड़तै
नव जमीन पर
नव घर बनतै
नव जगह बनतै।
मोन मुदा एखनो नहि मानैये
उपटाहु लोकक परिचिति छिनायब
हमर ही कें तोड़ैये
बंधैये करेज कें।
आहि रे बा! हे राजा,
आब त' अहां हमर
खेत सेहो हमरा स'
छीनै छी।
आब त' अततह क' रहल छी।
ई खेत जे हमरा
अन्न दैत अछि
ई खेत जे हमर
माय-बाप थिक
ई खेत जे हमर
जीवनक आधार थिक
ई खेत जे हमर
पानी-बानी थिक
ई खेत जे हमर
काज-रोजगार थिक

ई खेत जे हमरा
मनुखता देलक अछि।
ई खेत जे नहि
केवल रोटी दैत अछि
विचार सेहो दैत अछि।
ओ विचार जे
हमरा आ हमरा सन
लोकक शोनित मे
प्रवाहित भ' रहल अछि
ओ विचार जे
समाज-बन्ध कें कायम
रखबाक मूलाधार थिक।
ओ विचार जे
पोखरि सन नहि
नदीक धार सन
जानि नहि कहिया स'
बहि रहल अछि
हमरा आ हमरा सन
लोकक
मांस, मज्जा आ शोनित मे।

हे राजा,
अहां हमर मांस,
मज्जा आ शोनित
मांगि रहल छी।
तखन की रहि जायत
हमरा लग?
खाली अपन ठठरा ल'क'
कत' जायब?
कोना जीयब?
कोना जीयत हमरा सन
हजारो-लाखो लोक?

हे राजा,
अपन जीवन हम सभ
नहि द' सकैत छी अहांके
किन्नहु नहि।

हे राजा,
अहांक अपरम्पार लीला
बुझल अछि हमरा सभ कें

जहिया खेतिहरक खेत ल'क'
बहोत्तर बटैत रही
तहिया आइ फेर स'
बांट' चाहैत छी
नव ब्राह्मण कें
टाटा कें, बिड़ला कें
रॉकफेलर कें।

हे राजा,
बूझि गेलहुं
अहां बदलियो क'
नहि बदलल छी।
तहिया धर्मरत्नाकरक
विरुद्ध धारण करैत रही
आइ विकासवारिधि कहाब'
चाहैत छी।
तहिया भूपति कहबैत रही
आइ भूमण्डीपति कहाब'
चाहैत छी।
तहिया बनिज-बेपारीक संग
रहैत रही
आइ बजारक हाथ
बिकायल छी।

हे राजा,
लीला बिहार
अहां आब
जोर अजमाइश कैये लिअ'
बजाउ अपन टाटा, बिड़ला,
रॉकफेलर कें।
देखियै कत्ते सामर्थ्य छैक
ओकरो सभ कें।
अहांक विश्वग्रामक लीला कें
नन्दीग्रामक खेतिहर
चुनौती देलक अछि।
अछि सामर्थ्य त' रोकि लिअ'
सौंसे दुनिया मे जगैत, उठैत,
ताल ठोकैत
नन्दीग्राम कें। ◆



दांत

कहने रहै मां के
दुरामन काल
हमर मैयां,
मुंह मे रखने रहिहें पानि
सासुर मे।
हमर मां ई बात
कहियो ने बिसरल।
ककरो, कतबो गंजन पर
कोंचला पर, टोकला पर
मान आ अपमान पर
उपेक्षा आ अपेक्षा पर
नैहरोक खिधांश पर
मुंह स' नहि टघरलै पानि
रखनहि रहल मुंह मे पानि।
कहलक हमरो दुरामन काल
हमर मां
मुंह मे रखने रहिहें पानि
सासुर मे।
हमरो ई बात
बिसरल नहि होइये।
पानि रखला स'
मुंह त' दूरि नहि होइये,
मुदा दांत
कमजोर भेल जाइये।
हम दंतहीन नहि
हुअ' चाहैत छी
मां जकां।
ठीक छै जे-
हमर मां
दांतक उपयोग नहि केलक
अथवा हमर मांक
दांतक उपयोग नहि भ' सकलै।
मुदा हमहूं उपयोग
नहि करब
अथवा हमरो दांतक उपयोग
नहि हैत से-
कोना कहि सकैत छी? ♦

संपर्क : राधाकृष्णा कुंज, सी पी ठाकुर पथ, शिवपुरी, पटना-23, फोन-0612-6524714

फेर सँ

फेर सँ हमर
छोटका बेटा
भ' गेल अछि
दुखीत।
फेर कारी मेघ
कर' लागल अछि
टंडैली।
अवारा, लुच्चा
कारी मेघ
के देखि
हम दुनू परानी
फेर सँ डेराय लागल छी
फेर सँ हमर
दुखीत बेटाक
गाल पर
पसरि गेलए
आँखिक काजर
फेर सँ हम
लिख' लागल छी
एक नव कविता।

❑

दाँत

कहने रहै माँ के
दुरागमन काल
हमर मैयाँ,
मुँह मे रखने रहिहेँ पानि
सासुर मे।
हमर माँ ई बात
कहियो ने बिसरल।
ककरो, कतबो गंजन पर
कोंचला पर, टोकला पर
मान आ अपमान पर
उपेक्षा आ अपेक्षा पर
नैहरोक खिधांश पर
मुँह सँ नहि टघरलै पानि
रखनहि रहल मुँह मे पानि।
कहलक हमरो
दुरागमन काल
हमर माँ
मुँह मे रखने रहिहेँ पानि
सासुर मे।
हमरा ई बात
बिसरल नहि होइये।
पानि रखलासँ
मुँह त' दूरि नहि होइये
मुदा दाँत–

कमजोर भेल जाइये।
–हम दंतहीन नहि
हुअ' चाहैत छी
माँ जकाँ।
ठीक छै जे
हमर माँ
दाँतक उपयोग नहि केलक
अथवा हमर माँक
दाँतक उपयोग नहिं भ' सकलै।
मुदा हमहूँ उपयोग
नहि करब
अथवा हमरो दाँतक उपयोग
नहि हैत से
कोना कहि सकै छी।

❑

आब......

लोक
लाजे कठौत नहि होइए।
पैरक नह सँ
माटि खोदबाक चलनि
बन्द भ' गेल छैक।
घर मे चौखटि
नहि होइ छै।
धाप डेग के
गीड़ि गेल अछि।
वास्तवमे बूढ़ो के
छह दाँत होइ छै।
भरि फागुन दिअर
लगबाक लेल बुढ़बा
बौआएल फिरैए।
लोक
लाजे कठौत नहि होइए।
कोनो जुआन के
बाती बा' बाँसक
बेगरता नहि रहलैए।
कोनो बच्चा के
ठोर लाल करबाक
खांहिस नहि जनमै छै।
पात इलचीक आ'
कली अड़हुलक

एकदम्मे निषिद्ध छै
बच्चाक लेल।
ढाठ आ' ठाठक
प्रयोजन के जुग
नकारि चुकलए।
ठेंठ ने शब्द होइ छै
ने लोक।
स्वभावक रंगक पानि
टउआएल चलैए।

लोक
लाजे कठौत नहि होइए।
जीवन सँ
माटि
बाँस
काठ
हेठ भ' रहलए।
जिनगी
सिमेंट
बालु
गिट्टी
लोहा
होइए।
संगमरमर होइए......।

❑

ब्रह्मोत्तर

हे राजा!
अहाँक लीला
अपरम्पार अछि।
अहाँ हमर बाड़ीमे
फड़ल-फुलायल
गाछ सभ कें
कटबा देलहुँ।
हम किछु नहि
बजलहुँ।
मुनिगा कि केरा कि लतामक
गाछ रोपि लेब
फेर सँ।
हमर भरोस जीवित छल।
हे, राजा!
अहाँ मुदा एतबे पर
नहि मानलहुँ
हुकुम देलहुँ जे
अपन घरो हटा लिय'
मुआबजा देब।
अहाँक एहि मुनादीसँ
हमरा लागल
अहाँ हमरासँ हमर
परिचय छीनि रहल छी।
हमर बाबू कोनो वस्तु कें

अनुपयोगी ओ बेकार नहि
मानैत छला।
रहरहाँ कहल करथि ओ
कोनो वस्तु निरर्थक, बेकार
नहि होइत छैक।
सुतरी कि जौर
आ कि गरदामी कि पेना
सभक प्रयोजन कहियो
कखनो पड़ि सकैए।
ओ घर मे
हरेक प्रयोजनीय वस्तु
नियत जगहपर राखथि
अन्हारोमे से भेटि जाय।
ओ चलि गेला
मुदा हम
ओहि जगह पर
सुतरी कि जौर गरदामी कि पेना
आइयो रखैत छी
जत' ओ राखल करथि।
ओ जगह सभ
बाबूएक समय सँ
ठेकनाओल अछि
हमरा, हमर परिवार केँ
हे, राजा!
चलू, हम अहाँक इहो
हुकुम मानि लेलहुँ।

विकास लेल लोक केँ
उपट' पड़तै
नव जमीनपर नव घर बनतै
नब जग्गह बनतै
मोन मुदा एखनो नहि मानैए
उपटाहु लोकक परिचिति छिनायब
हमर ही केँ तोड़ैए
बेधैए करेज केँ।
आहि रे बा, हे राजा!
आब त' अहाँ हमर
खेत सेहो हमरासँ
छीनै छी।
आब त' अतत्तह क' रहल छी।
ई खेत जे हमरा
अन्न दैत अछि
ई खेत जे हमर
माय-बाप थिक
ई खेत जे हमर
जीवनक आधार थिक
ई खेत जे
हमर बोली-बानी थिक
ई खेत जे
हमर काज-रोजगार थिक
ई खेत जे हमरा
मनुक्खता देलक अछि
ई खेत जे

नहि केवल रोटी दैत अछि
विचार सेहो दैत अछि
ओ विचार जे
हमरा आ हमरा सन
लोकक शोणित मे
प्रवाहित भ' रहल अछि
ओ विचार जे
समाज-बन्ध कें कायम
रखबाक मूलाधार थिक
ओ विचार जे
पोखरि सन नहि
नदीक धार सन
जानि नहि कहियासँ
बहि रहल अछि
हमरा आ हमरा सन लोकक
मांस, मज्जा आ शोणितमे।
हे, राजा!
अहाँ हमरा मांस
मज्जा आ शोणित
माँगि रहल छी
तखन की रहि जायत
हमरा लग?
खाली अपन ठट्ठर ल' क'
कत' जायब?
कोना जीयब?
कोना जीयत हमरा सन
हजारो-लाखो लोक?
हे, राजा!
अहाँक अपरम्पार लीला
बूझल अछि हमरा सभ कें
जहिना खेतिहरक खेत ल' क'
ब्रह्मोत्तर बँटैत रही
तहिना आइ फेर सँ
बाँट' चाहैत छी
नव ब्राह्मण कें
टाटा कें, बिरला कें
रॉकफेलर कें।
हे, राजा!
बूझि गेलहुँ
अहाँ बदलियो क'
नहि बदलल छी।
तहिया धर्मरत्नाकरक
विरुद धारण करैत रही
आइ विकास-वारिधि कहाब'
चाहैत छी।
तहिया भूपति कहबैत रही
आइ भूमण्डीपति कहाब'
चाहैत छी।
तहिया बनिज-बेपारीक संग
रहैत रही
आइ बजारक हाथ
बिकायल छी।

हे, राजा!
लीलाबिहारी!
अहाँ आब
जोर अजमाइस कैयेॅ लिय'
बजाउ अपन टाटा, बिरला
राकफेलर केँ
देखियै कत्ते सामर्थ्य छैक
ओकरा सभ केँ।
अहाँक विश्वग्रामक लीला केँ
नन्दीग्रामक खेतिहर
चुनौती देलक अछि।
अछि सामर्थ्य त' रोकि लिय'
सौसें दुनियामे जगैत,
उठैत
ताल ठोकैत
नन्दीग्रामकेँ।

❑

मोछ

कालि्ह हमर डेरा पर
आबि ओ
अपन नवका विदेशी
पिस्तौल देखा गेलाह।
गना गेलाह एक-एक क'
ओकर विशेषता
मारक क्षमता।
छोट-छीन टुनमुनियाँ
कारी चमकैत पिस्तौल
देखबामे लगैत छल
हिलसगर।
ओ गद्गद् भ'
सुनबैत रहलाह
पिस्तौल प्राप्तिक खिस्सा।
मैथिलक बदलैत
प्रकृति, आवश्यकता–
आर, विकासक संग
अस्त्रक अनिवार्यता पर
दैत रहलाह भाषण।
–ई व्यक्ति जे कालि्ह
हमरा पिस्तौल देखा गेलाह
कहियो क' अबैत रहैत छथि।
आ' अयाची मिसरक विरुद्ध
तर्क करैत

कहियो के अपन गाछक
एक झोरा लताम
अपन बाड़ीक एक हत्था केरा
अपन पोखरिक
एक फड़ी माछ
हमरा लेल अनैत रहैत छथि।
किछु कहला पर
लगै छथि देब' उपदेश,
बड़का भैया संग
स्कूलमे छलाह पढ़ने
तैं अपने मोने हमरा
अपन अनुज मानै छथि।
अपने मोने सुनबैत
रहैत छथि
के, कोना कमाइए तकर गप्प!
आ' अग्रज तुल्य
अधिकारक संग
खराब होइत दुनियाँ
दिल्लीसँ पटना धरिक
चलैत व्यापार
दुख कटैत परिवार आ
सामाजिक सरोकारक
उदाहरण द'
किछु-किछु चलब' लेल
उकसबैत रहैत छथि।
अपने मोछ नहि
रखने छथि
तैं हमर मोछक
रहैत छनि बड़ चिन्ता।
ओना त' कहैत रहैत छथि
जे कटा लिअ' मोछ
अनेरे किए छी रखने,
पैघ लोक कतहु मोछ राखय?
देखा दिअ' कोनो पैघलोक के
जे मोछ रखने हो।
ओ जमाना चल गेलै
जहिया मोछ पुरुषत्वक
चेन्ह रहए,
आब त' पुरुषत्वे
पैघ लोक हेबाक
मार्ग मे अछि
बड़का बाधक।
तैं कहैत रहैत छथि
हमरा अनुज बुझनिहार,
पैघ लोक हेबाक अछि त'
मोछ कटा लिअ'
अथवा एना क' काज
करू, कमाउ
जे मोछ मे नहि लागए।

❑

मुक्ति समारोह

अपन मुक्ति लेल
टुकुर टुकुर तकैत
विशाल जनसमुदायक
जयघोषसँ
भयाक्रान्त
शान्तिक प्रतीक परबा
राजनीतिक हाथमे
श्वेत-श्याम चित्रक
प्रायोजित प्रदर्शन लगैए।
कारी राजनीतिक
व्यूह मे घेराएल
श्वेत-शान्तिक
प्रतीक पक्षीक
मुक्ति समारोहकेँ
दूरदर्शनी इच्छासँ देखैत लोक
जगमग करैत मंचपर
अपन भारत के तकैत रहैए।
स्वप्न वितरण चलैत रहैए। मुदा,
मंचक पाछू नेपथ्यमे
राजनीतिक हाथमे
बेरा-बेरी जएबाक लेल अभिशप्त
गरमीक त्रास सहैत
भूख-प्याससँ व्याकुल
विवश चिड़ै
मुक्तिक प्रतीक्षा मे
जीवनसँ मुक्ति पबैत रहैए।
मंचसँ घोषित होइत रहैए–
शान्ति, अहिंसा शब्द
नेताक जयगान.......
'मेरा भारत महान'.......।

❑

भोट

सेना सजि रहलए
पीजा रहलए तरूआरि
चोख क'–
रहलए भाला
विषाक्त तीर
बल्लम, बर्छा।
अपन-अपन
जीत लेल
कबुला
क' रहल डोकहर
बबुला।
जी हाँ, झमटगर गाछपर
शुरुह भऽ गेलए
कौआक काँव-काँव
उड़ि रहलए चिल्होरि
अकास मे
प्रतीक्षा क' रहलए
महाभोजक।
–अदना लोक
माने एक भोट,
अपन सुरक्षा लेल–
बौआ रहलए
रने-वने
डरें, सकदम भेल।
एही भोटक खातिर
पता नहि
कोनो तीर तरूआरि,
भाला बल्लम,
बर्छा पर–
ने लिखल होइ,
कहीं–
ओकर
नाम......।

❑

आब किछु करू आचार्य!

आचार्य,
अहाँ कोनो कवि जकाँ
मोनक भाव आ
चिकित्सक जकाँ
देहक रोग
चिन्हैत रहल छी
उपदेशक बनि
नग्न सत्य सभ कें
रेशमी आँचर सँ
झाँपि-तोपि
बिल्हैत रहल छी
अहाँ रहल छी पढ़बैत
नेनेसँ लोक कें
शिक्षक जकाँ

आचार्य,
अहाँ कोनो झमटगर
गाछ सन
बौआइत लोक कें
शीतल छाया
दैत रहल छी।
बिलमैत रहल अछि लोक
अहाँक कर्पूर गौरं
करुणावतारं
व्यक्तित्वक छाहरि मे।

उठि कें बैसबाक लेल
फेरसँ चलबाक लेल अहाँक कोमल स्पर्श
कोनो पिता जकाँ
दुलरबैत रहल अछि।

आचार्य,
सुनगैत मोनक ताप
तँ सहल जा सकैए,
एक-दोसरा कें
कहल जा सकैए।
मुदा, लहकैत आ
पजरैत चल जाइत
मनुक्खसँ मनुक्ख कें
फराक कर' बला
दावानल कें कोना
रोकल जा सकैए
कोना रोकल जा सकैए
बढ़ैत बेढ़ आ आरि कें?
कानमे तूर द' सुतल कें
जगाओल कोना जा सकैए
दावानलसँ लड़बाक प्रवृत्ति
बढ़ाओल कोना जा सकैए?

आचार्य,
आइ अपन सभ रूप समटू अहाँ
बरू, दुलराइ जुनि
सहलाउ जुनि।

पिघलू आ पाथर होउ।
बहुत दिन बजैत रहलहुँ,
व्यथा-कथा कहैत रहलहुँ,
आब जोरसँ–
चिचिआउ आचार्य।
निकलि चलू अपन
सीमा सँ बाहर
आब किछु करू आचार्य!

❑

जखन पियासे मरि जायत

भाइ, तहिया अहाँक चुप्पी
हमरा नहि सोहाइत छल
मुदा आब त' अहाँ हमरे
चुप्प करेबा पर लागल छी।

हमर बजबाक मादे बिगड़ू जुनि
हमरो किछु गप मानू
यदि बरदास्त नहि होइए
त' भले ही अपने जरू, पजरू
मुदा संवेदनाक दाहसंस्कार जुनि करू।

हम त' युग-युग सँ
बाजि रहल छी
बजैत अयलहुँ अछि
बजैत रहबे करब
भाइ, आब कत्ते दिन हम
अहाँके सहैत रहब?

स्वीकार-अस्वीकार
सहमति-असहमति
हमरा लेल आब कोनो
माने नहि रखैत अछि
माने रखैत रहय तहिया
जहिया हमर आँखिमे
बालुए-बालु पसरल रहय
आ मोनमे नागफनी चतरल रहय।

मुदा भाइ, मृगमरीचिका मे
भटकैत-भटकैत
जखन पियासे मरि जायत
त' जिनगी की?
जिनगीक प्रश्न की?
हरेक प्रश्न उत्तर मंगैत छै
आ चुप्पी आब
उत्तर नहि भ सकत छै।

❑

एहि भ्रम मे नहि रह'

अवसरक तराजू टपा क'
खूब काज सुतारै छह, राजनीति मिसर!

धर्म-कर्म
इतिहास-भूगोल
जाति-भाषाक
बड़ कयलह बाँट-बखरा
मकड़ा सन तोहर
जबाब नहि छह
वाह, खूब परतारै छह, राजनीति मिसर!

लोक के बाँटि-कूटि
अपने खयबाक लेल
राजाघर जयबाक हिस्सक
अदौ सँ लगौने छह।
अनकर विवशता नोंचि-नांचि
अपन भूख मेटयबाक प्रवृत्ति
खूब जगौने छह।
सूताबह-सूताबह
हफीम खुआ लोक के सुताबह
ओंघाइत, सपनाइत लोक कें
वाह, खूब बहटारै छह, राजनीति मिसर!

अकाल तख्त
राम जन्मभूमि
बाबरी मस्जिद आ

सती चबूतराक
चारूकात हाथ मे
खुजल तरूआरि द' के
बिना कोनो मेंहक
दाउन करबैत छह।
बिला गेल नांगरि के
फेरसँ उगबैत छह।
बान्हह, बान्हह
आँखि पर पट्टी बान्हह
लोकेक काटल औंठा देखा
वाह, लोके के पुचकारै छह, राजनीति मिसर!

हे आब एहि भ्रममे
नहि रह' जे
तों अंगुलीमाल बनल रहबह
आ कपिलवस्तुक कोनो सिद्धार्थ
बुद्ध बनि क' तोहर
हृदय परिवर्तन करथुन।
आब त' प्रत्येक कटल औंठा
अपन हिसाब अपने करत।
तोहर चेहराक एक-एक खोल़
लोक आब उतारै छह, राजनीति मिसर!

❑

सन्दर्भ : चुनाव वर्षक

चुनाव
भ' रहल जुआ
चलि रहल दाओ
जनतंत्रक द्रौपदी
क' रहलीहे चेष्टा
अपन लाज बचेबाक
प्राण-प्रण सँ।
जी हँ, काल्हिए राति तँ
चिचिआइत छलीह द्रौपदी
कृष्ण! मुरारी!!
घनश्याम!!!
मुदा कोनो शिखर वार्तामे
ओझरायल
सुनि नहि सकलाह
हाक
आबि नहि सकलाह
श्याम।
ओलती मे टांगल
पिजरा मे फड़फड़ाइत
रहल सुग्गा
कँपैत कंठ सँ
बजैत रहल
रटलाहा नाम
राम........राम

क्लीव बनल
मुड़ी झुकौने
पाण्डव
पकड़नहि रहलाह आसन
चीर-हरण
करैत रहल
चुनावक दु:शासन।
भोट
सेना सजि रहलए
पीजा रहलए तरूआरि
चोख क'
रहलए भाला
विषाक्त तीर
बल्लम, बर्छा।
अपन-अपन
जीत लेल
कबुला
क' रहल डोकहर
बगुला।
जी हँ, झमटगर गाछ पर
शुरू भ' गेलए
कौआक काँव-काँव
उड़ि रहल चिल्होरि
अकासमे
प्रतीक्षा क' रहलए
महाभोजक।

-अदना लोक
मोन एक भोट
अपन सुरक्षा लेल
बौआ रहलए
रने-बने।
डरें, सकदम भेल।
एही भोटक खातिर
पता नहि
कोनो तीर, तरूआरि
भाला-बल्लम
बर्छा पर-
ने लिखल होइ
कहीं
ओकर
नाम......।

❑

राजनीति आब महकि रहलैए

फूकि-फूकि क'
सुनगाओल आगि
लहकि रहलैए।
जन-गन-मन गबैत लोक
बहकि रहलैए।
ई शहर-शहर
गाम-गाम
हर-हर महादेव
अल्ला हो अकबरक
पिशाची स्वर
लाशक अमार
खूनक टघार
भाइ, राजनीति आब
महकि रहलैए।
गन्हाइत
व्यवस्थाक काठ पर
गोबरछत्ता सन उगल
सत्ताक खेल मे
ताश बनल लोक
फेंटा रहलैए
बँटा रहलैए
भाइ, राजनीति आब
कोट-पीस खेला रहलैए।
ई तंत्र
मनुक्खसँ
मनुक्ख के छीनैए
पहिने घैरै छल
जमीन के
काँटक तारसँ
आब लोकक मोनमे
नागफनी उगबैए
भाइ, राजनीति आब
धर्मक सिक्का चलबैए।
पसरल आतंक आ
श्मशानी शांति मे
वामा आँखि फड़कैए
करेज तखन धड़कैए
भागलपुर मे मानवताक
चारि मासक बेटा जखन
खूनसँ लथपथ
तड़पैए
भाइ, राजनीति आब
मरूभूमि बनबैए।
ई जननी जन्मभूमि
ई शश्य श्यामल देश
ई राम-रहीमक घर
ई स्नेहक अजस्र धार
ई एक कुटुम्ब परिवार
ई गीता आ कुरान
ई भारत देश महान
भाइ, राजनीति आब
एकरा जरबैए। ❑

कहलनि तूफान अली

ठेंठी धोती पर
कमीज पहिरने
भेटल रहथि
तूफान अली।
पुछने रहियनि हुनका
किए ने पहिरैत छी
अहाँ चुस्त पैजामा
शेरवानी?
कहलनि बिंहुँसि क'
बाप-दादा जे पहिरैत छला
सैह हमहू छी पहिरैत।
कहलियनि, किए ने उर्दू
अहाँ छी बजैत?
सरकार उर्दू के दोसर
राजभाषा बना देलक अछि
अहीं लोकनि लेल।
उर्दूक विकास संग
अहूँ लोकनिक हैत विकास
एहि पर किए ने छी
अहाँ सोचैत?
कहलनि तूफान अली
ठोर कने घोंघचा क'
भाखाक गप करै छी अहाँ
हमर माय जे भाखा बजैत छल
हमर दादी जे भाखा बजैत छल
से भाखा छोड़ि,
कोना बाजू उर्दू?
हे, हम सभटा बुझै छियै
परम्परासँ काटि क'
विकासक गप करैत सरकार
केवल राजनीति करैए
भोटक राजनीति।
असलमे हमर सभक
नहि छै कोनो चिन्ता, बेगरता
ओ त' खाली
चिन्ताक ढोंग करैए
जहिना नकली हिन्दू गढ़ैए
तहिना नकली मुसलमान गढ़ैए।

❑

बुधियार

रहरहांक रस्ता छोड़ि
दोगे-दोगे निकसैत
बनल विराट
नटसम्राट
तों बड़ बुधियार छह, कक्का!
लेबल-मुनल घर मे रहनिहार
नाक के तौनीसँ झाँपि क'
चलनिहार
हरेक सुन्दर मुँह पर
आँखि गड़ौनिहार
धतपत्-धतपत्
हरिओम्तत्सत्
तों बड़ बुधियार छह, कक्का!
बिजुरी सन छिटकि क'
अनकर आंगन के उघार करैत
बड़ आ पीपड़ सन
घरे-घर दरारि तकैत
चाहक चुस्की
चौअनियाँ मुसकी
तों बड़ बुधियार छह, कक्का!
शुभ-लाभ हेरैत
वंशी टेरैत
विवशताक बोर द'
तरेरा छिपैत
बिलगबैत
पनिअबैत
तों बड़ बुधियार छह, कक्का!
कक्का हौ
बूड़ि तोहर भाजित सभ
सिक्का चढ़ौने तोरा
बापक भाइ मानै छह
बपहारि काटै छह
दुख स्रष्टा
चिर विपटा
तों बड़ बुधियार छह, कक्का!

❑

मनुक्खक धरोंहि थिक कविता

जहिया कोनो
नाजायज बातक विरूद्ध
टिप्पणी लिखैत छी
हाकिम कहैए
कविता करै छथि।
जहिया-जहिया
लोक भीतर सँ तमसायल रहैए
मुदा किछु क' नहि पबैए
तँ कहैए
कविता करैत छथि।
जे लोक आइ-काल्हि
कविताक खिधांश करैए
कविता पर तमसायल रहैए
से निश्चित मानू
डेरायल लोक अछि।
ई सभ डेरायल लोक
जे बाघक बाना धेने रहैए
से छागर-भाव
आ हरिण कविता चाहैए
चाहैए जे कविता ओकरा
चाटै, चुम्मा लैक
दुलरबै, सोहरबै
मुदा शिश्नपूजी लोकक
बेलपात नहि थिक कविता।

कविता आब
घात-प्रतिघात सहैत
इतन्दारी सँ जीवैत
बढ़ल चल जाइत
मनुक्खक धरोंहि थिक
ई धरोंहि जकरा
नहि बरदास्त होइ छै
से कहैए
कविता करै छथि।

विष

हम निर्जन
अकाबोन
जंगलमे
अपस्यांत छी
एकटा सापक लेल
भेटिते एकटा विषधर
कने कटिते हमरा।
छोड़िते विष हमर देह मे।
हे, गाछ
अहाँ त' अदौसँ
एत' ठाढ़ छी
अहाँ के अवश्ये बूझल होयत
जे साप कत' रहैत अछि।
हे, नदी
अहाँ त' जानि नहि
कहियासँ बहि रहल छी
एहिना अनबरत
अहाँके जरूरे बूझल होयत
जे साप आइ-काल्हि
कत' टहलैत-बूलैत अछि।
हे, फूल
अहाँ त' दिन-राति
कोनो मौसममे
सुगन्धि छिड़ियबैत
फुलाइत रहैत छी
अहाँ जरूर जनैत होयब
जे साँप कत' सँ अबैत अछि।
हे, इजोत
अहाँक किरण
कतेक शक्तिशाली अछि
नहि छै ककरो नुका रहबाक
सामर्थ सघन अन्धकारो मे
एकर सोंझा
अहाँ त' जनैते होयब
जे साप एखन
कोन बिल मे निवास करैत अछि।

❑

खायब आ नहायब

पुरूख आ स्त्रीक
खायब आ नहायबमे
एक अन्त:सम्बन्ध
अदौ सँ रहलैक अछि
जहिया पुरूखक खायब आ
स्त्रीक नहायब कियो-कियो
देखैत छल
तहिया सरिपहुँ पुरूख
कम खाइ छला
आ स्त्रीयो
कमे नहाइ छली।
मुदा जहियासँ
पुरूख बेसी खाय
लगला अछि
क्रमश: स्त्रीयो बेसी
नहाय लगली अछि
अहाँके भले ही
लगैत हो जे स्त्री
पुरूखक बेसी खायब कें
अपन बेसी नहायबसँ
झाँपनि द' रहल छथि
अथवा पुरूखक पेटक
अपवित्रता के
अपन देहक
पवित्रता द्वारा
मँजैत
स्त्री-धर्मक
पालन क' रहल छथि,
मुदा हमरा त' लगैए जे
पुरूख आ स्त्रीक एहि
खायब आ नहायबक
जड़ि मे
वितृष्णा आ घृणाक
सम्बन्ध
पोसा रहल अछि
अदौ सँ लगातार
निरन्तर।
पुरूख अपन खेबाक सुविधा
बढ़बैत रहथु
भनसे घर के बना लेथु
खेबाक घर
खाथु खूब खाथु
मुदा स्त्री आर कछु नहि
क' सकती त'
पुरूखक देल सुविधाक
उपभोग करैत
रगड़ि-रगड़ि क' अपन
देह साफ करैत रहती
नहाइत रहती
मोनक मोन साबुनसँ
आरगेनिक शैम्पूसँ
स्नान घरमे
घंटो.......। ☐

जिन्न

हौ भाइ,
हइ बहीन
ई बात अजगुत लगैत छह
कि नहि लगैत छह
कि जेकरा हम सभ
निघेंस जकाँ टारि दैत छी
कि जेकरा सम्बन्धमे
लतीफा
कि चुटकुला गढ़ैत छी
से कि त' आतंकवादी बनैए
कि त' कोनो घोटाला करैए।
हौ भाइ,
हइ बहीन
ई बात अजगुत लगैत छह
कि नहि लगैत छह
कि हँसी-मसखरी मे
डूबल हम-सभ
ककरो मोजर किंवा
सम्मान डरें दैत छी किंवा
लोभे दैत छी।
हौ भाइ,
हइ बहीन
ई बात अजगुत लगैत छह
कि नहि लगैत छह
कि ई देश केतली भ' गेलए
कि सत्ता चीनी सन
कि बन्दूक पत्ती सन
कि धन पानि सन
मीलि क' खौलैए
आ हमरा लोकनिक लेल
ई 'बेड टी' सन
एकदम्मे जरूरी भ' गेलए
पेट साफ राखक लेल।
हौ भाइ,
हइ बहीन
ई बात अजगुत लगैत छह
कि नहि लगैत छह
कि द्यूत-क्रीड़ा
कि पचेसी
कि शतरंज
कि ताश खेलाइत
हम सभ
बादशाह-बीबी
पनमा-गुलमा करैत
ससरैत-ससरैत
जोकर धरि पहुँचि गेल छी।
हौ भाइ,
हइ बहीन
ई बात अजगुत लगैत छह
कि नहि लगैत छह
कि तोरे हथियारसँ
तोरा मारैत

हँसी-मसखरी करैत
जोकर
तोरामे डर
कि लोभ बढ़ा रहल छह
देवता सन पुजा. रहल छह।
हौ भाइ,
हइ बहीन
ई बात अजगुत लगैत छह
कि नहि लगैत छह
कि लतीफा कि चुटकुला गढ़ैत
कि लोभाइत किंवा डरैत
कि देवता पूजैत
पूंजिये पार भ' रहल छह
अपने जन्माओल जिन्न
बकार बन्न केने छह।

❑

की भेल?

की भेल जे
भोरका सुर्ज
नहि देखैत छी
की भेल जे
चिड़ै-चुनमुनीक
कलरब नहि
सुनैत छी
की भेल जे
सुपक्क गोपी
नहि चिखैत छी।
की भेल जे
तिरहुत-मलार नहि
गबैत छी।
की भेल जे
ढोरही लगसँ
नहि हँसैत छी
की भेल जे
कनबो बेर मे
नहि कनैत छी
की भेल जे
बजबो बेर मे
नहि बजैत छी
की भेल जे
नहि बचा सकलहुँ
अपनामे

किछुओ
जे बचेबाक छल।
की भेल जे
सोर करैत अछि कियो
त' बूझि नहि पबैत छी
जे हमरे कहि रहल अछि।
की भेल जे
ककरो इशारा पर
पैर स्वतः बढ़ि जाइत अछि
ओकरे दिस
की भेल जे
ककरो झुकौला पर
झुकि जाइत अछि माथ
ओकरे सोंझा
की भेल जे
हमर गलामे पड़ल अछि
गरदामीक चेन्ह
की भेल जे
हमर हाथ छूबैत रहैत अछि
गलामे पड़ल
चेन्ह के बेर-बेर
की भेल जे
एक दोसराक चेन्ह के
छूबाक लेल
हम-सभ एक-दोसराक
गर्दनि पकड़ि
रहल छी
की भेल जे
कोजागराक चान
टहलि रहल अछि
बीच धार मे
की भेल जे हम
मुरुत बनल छी
बीच बजार मे
की भेल?

❑

आठम अनुसूचीमे मैथिली

जाहि लेल केलहुँ कबुला
सुमिरलहुँ देवी-देवता के
जपलहुँ मंत्र
बजेलहुँ झालि
राति दिन आठोयाम
से मनोरथ भ' गेल पूर
आब की करब, भाइ
चलू वैष्णव भ' जाइ।

जेकरा लेल रहलहुँ सपनाइत
सुतलहुँ मुदा चेहाइत
फेरलहुँ करौट पर करौट
धंगलहुँ तोसक, उलौंच
उठि उठि गनैत रहलहुँ कोड़ो-बाती
सोचैत रहलहुँ जे कहूँ पाबि जाइ
से मानिक भेटि गेल आइ
आब की करब भाइ
चलू पचीसी खेलाइ।

जे हमर चान
ग्रसित केने छल जेकरा राहु
लागल छल ग्रहण
कतोक दिनसँ
ढोंढ़ी धरि जलमे
उग्रासक प्रतीक्षामे ठाढ़ रही जकर
ह.......ह.......ह........
भ' गेल उग्रास
भ' गेल मोक्ष
आब की करब भाइ
चलू गंगा नहाइ।

❑

ऋतु बदलि रहल अछि

देखबाक कोशिश करैत छी हम
मुदा बहुधा देखै नहि

ऋतु बदलि रहल अछि
स्वच्छ अकास देखब
रहरहां होइत अछि मुश्किल
स्वच्छ वायु लेल जेना
रकटल रहैत अछि प्राण
पहाड़क चोटीसँ बर्फ
जेना अलोपित भ' रहल अछि
नहूँ-नहूँ वायुमण्डल मे
ताप बढ़ि रहल अछि
ऋतु बदलि रहल अछि।
रातिक अन्हार भ' रहल अछि
सघन
दिनक इजोत मे
लगैत अछि चकचोन्ही
बसंतोक भोर आब
महमह भोर नहि होइए
उतरि रहल अछि साँझ
हाँजक हाँज बगुला
उड़ि रहल अछि
ऋतु बदलि रहल अछि।
ऋतु के बदलैत
ताप के बढ़ैत
बगुला के उड़ैत
पबैत छी
जेना देखि नहि
पबैत छी हम बहुधा
आँखिक सोंझामे
पसरल तरहत्थी।

❑

चल गेला महाप्रकाश

फोन पर कहलनि
भाइ सुकान्त
महाप्रकाश चल गेला।
एहन व्यथित-मथित स्वर
सूनल नहि छल।

काल जेना तीरि क'
छीनि लेलक हुनका।
माँस, हड्डी, रक्त, मज्जा
नोचायल-तिरायल लगैए
एहन भोग भोगल नहि छल।

जड़ि-मूल सँ मचोड़ि
फूल-पात संग
उखाड़ि-पुखाड़ि
देलक जेना बिहाड़ि।
घास, पात, दूबि, माटि
सुखायल पियरायल लगैए
एहन विकाल देखल नहि छल।

चल गेला महाप्रकाश
जयवर्द्धन चल गेला।

टांगल अछि देवाल पर
बर्फक पहाड़वला
फड़फड़ाइत कैलेन्डर।

भाइ एहि जड़कालामे
उस्माक जोगाड़ लेल
काज आओत
हमरा सभ के
खाली हौसला।

❑